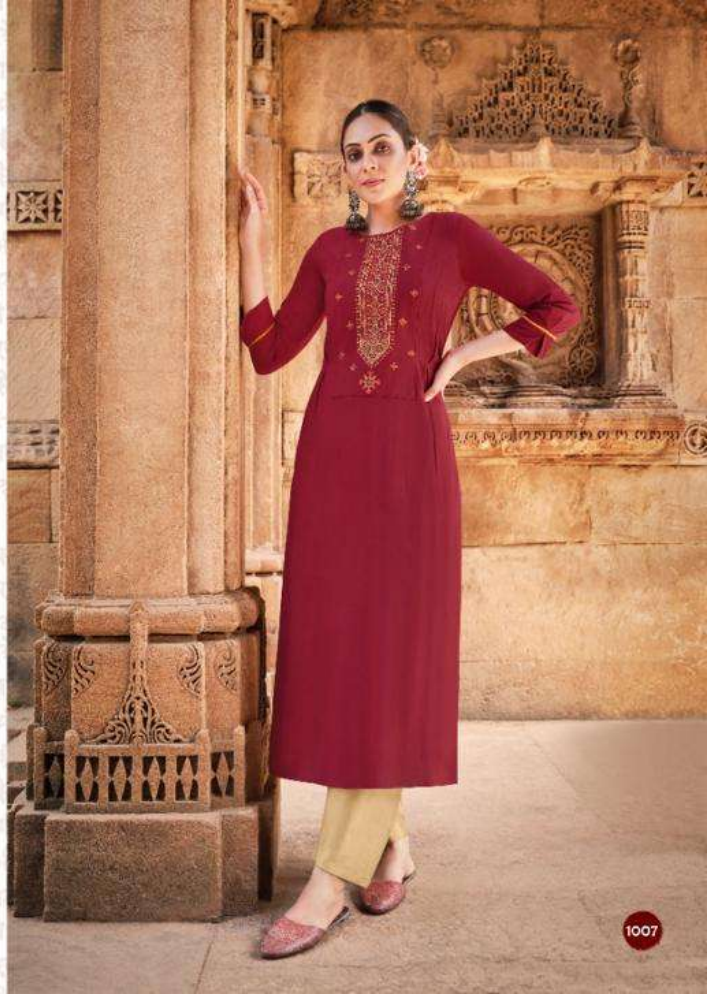
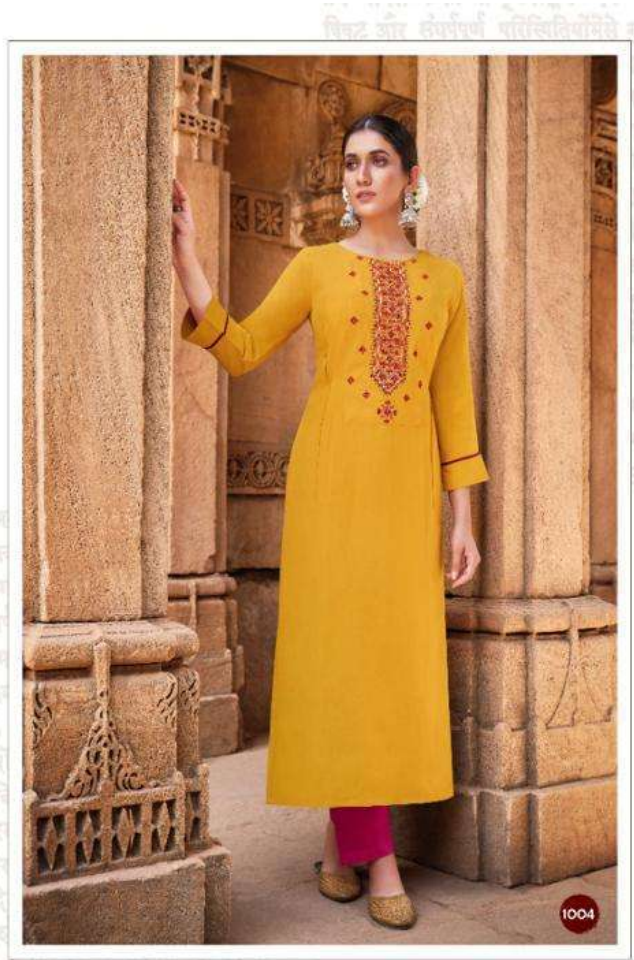
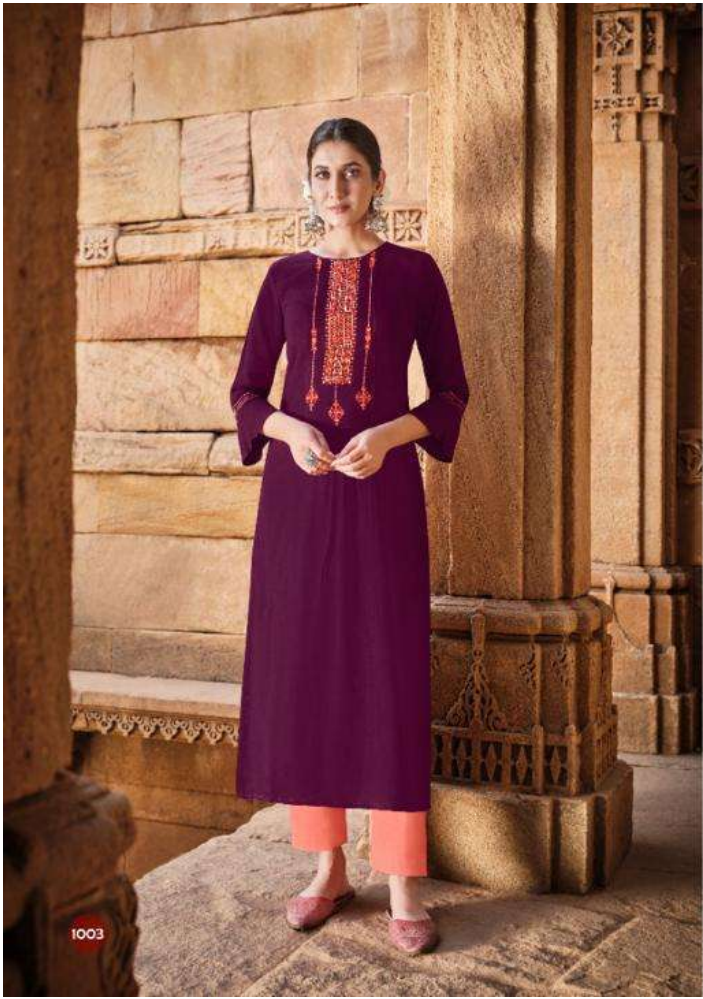










हमें भगवान् भीरम और भगवती भोतीदाके
के कीर्तनालीय आवाजों विराजते गर्व भक्तोंके
(भीर
(भीर
द्विधौ
नरिक
हममें
सादा



नरा य
शिष्टा
। श्री
नखरा
हमें भ
के प्र
मि दलन इद्वारा ज्ञाना य । भगवान् आरामके
इय भीरामभक्तोंके सुन्दर और रोचक आरुपा



1005



मावेष्ट हत एक ही अङ्गमें हो सफल करिनि धा, अतः करवरी और मार्ग माखे
भी प्रत्यय प्रथम और द्वितीय परिशिष्टाणके रूपमें प्रकाशित होंगे । दोनों परिशिष्ट
अङ्कको
सतत्त्व,
नी मह
आदि
तीव्रतर
य इस
य थी

द्वारा
य इस
श्रीरामभक्तिके सुन्दर और रोचक आख्यान भी इसमें विद्यमान है । भगवान् श्रीरामकी
प्रमुख स्थानों, पर्वतों, नदियों एवं सरोवरोंका माहात्म्य तथा श्रीरामके वन-गमन ए



